जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – मार्च 2024 ।। अंक – 44 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

हजार से लखपति का सफर
(पृष्ठ – 02)

पीतल व्यवसाय ने
बदली जीवन
(पृष्ठ – 03)

एग्रो एकड़ चकाई
जीविका महिला किसान
प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, जमुई
(पृष्ठ – 04)

डिजिटाइजेशन से सामुदायिक संगठनों की कार्यप्रणाली में आई पारदर्शिता

ग्रामीण क्षेत्र के गरीब परिवारों को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए जीविका द्वारा अनेकों प्रयास किये जा रहे हैं। इस कड़ी में महिलाओं को सामुदायिक संगठनों के माध्यम से संगठित करते हुए वित्तीय संसाधनों तक उनकी पहुँच आसान की गई है। साथ ही जीविकोपार्जन संबंधी विभिन्न गतिविधियों से जोड़कर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है।

खास बात यह है कि इन सभी जानकारियों को संग्रह एवं जानकारी प्राप्त करने हेतु सामुदायिक संगठनों को आधुनिक तकनीक से जोड़कर उनकी कार्यप्रणाली को पारदर्शी बनाया गया है। अब सभी स्तर के जीविका सामुदायिक संगठनों– स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन, संकुल स्तरीय संघ एवं उत्पादक समूहों को डिजिटल माध्यम से जोड़ दिया गया है। इससे जीविका सामुदायिक संगठनों से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी जीविका के समुदाय आधारित संगठन – प्रबंधन सूचना प्रणाली (सीबीओ–एमआईएस) पर उपलब्ध है। साथ ही सामुदायिक संगठन स्तर पर होने वाले वित्तीय लेन–देन को भी डिजिटाइज किया जा रहा है। इस प्रकार के प्रयास से जीविका सामुदायिक संगठनों की कार्यप्रणाली को पारदर्शी बनाया गया है जिससे जीविका के कार्यों एवं उपलब्धियों के बारे में त्वरित जानकारी प्राप्त करना किसी के लिए भी आसान हो गया है।

सबसे बड़ी बात यह है कि डिजिटाइजेशन का यह कार्य स्वयं समुदाय द्वारा ही किया जा रहा है। अब सामुदायिक संगठन स्तर पर होने वाली हर प्रकार की गतिविधियों को जीविका दीदियों या जीविका मित्रों के द्वारा विभिन्न मोबाइल एप के माध्यम से डिजिटाइज किया जाता है। जीविका एम.आई.एस. टीम द्वारा समुदाय को ध्यान में रखते हुए विभिन्न मोबाइल एप एवं वेब पेज बनाया गया है। इन मोबाईल एप की सहायता से अपने क्षेत्रों की उपलब्धियों को अधतन करना आसान हो गया है। इसके लिए जीविका मित्रों को चिह्नित कर उनका क्षमतावर्द्धन किया जाता है। परिणामस्वरूप आज बड़ी संख्या में जीविका मित्र ऑनलाइन प्रविष्टि का कार्य कर रही हैं।

जीविका सामुदायिक संगठनों को डिजिटाइज करने के प्रयास के तहत निम्नलिखित कार्य किये जा रहे हैं–

जीविका का समुदाय आधारित संगठन – प्रबंधन सूचना प्रणाली (सी.बी.ओ.–एम.आई.एस.) :– जीविका सामुदायिक संगठनों को डिजिटाइज करने का प्रयास बेहद शुरुआती दौर से ही किया जा रहा है। इसके लिए जीविका द्वारा अपना 'सीबीओ–एमआईएस' विकसित किया गया है। इसमें सभी प्रकार के सामुदायिक संगठनों यथा– स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन, संकुल स्तरीय संघ एवं उत्पादक समूहों के नाम, उनकी गठन तिथि, स्थायी पता, बैंक का नाम बचत एवं ऋण खाते की विवरणी के साथ–साथ समूह से जुड़े सदस्यों के नाम एवं उनकी विस्तृत आर्थिक एवं सामाजिक विवरणी आदि एम.आई.एस. पर उपलब्ध है। एम.आई.एस. पर सामुदायिक संगठनों एवं इससे जुड़े सदस्यों के प्रोफाइल के साथ–साथ उनके वित्तीय लेन–देन को नियमित रूप अद्यतन किया जाता है। संकुल स्तरीय संघ एवं ग्राम संगठनों के वित्तीय लेन–देन को मासिक आधार पर एम.आई.एस. पर अद्यतन किया जा रहा है।

एन.आर.एल.एम.–लोकओएस (LokOS):– जीविका के सी.बी.ओ.–एम.आई.एस. के अलावा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एन.आर.एल.एम.) के लोकओएस पर भी सामुदायिक संगठनों का डिजिटाइजेशन किया जा रहा है। लोकओस पर डिजिटाइजेशन का कार्य समूह एवं ग्राम संगठन के ई–बुककीपर के द्वारा किया जाता है। लोकोएस पर भी सामुदायिक संगठनों की प्रोफाइल इंट्री की जा रही है। इसके उपरांत लेनदेन की प्रविष्टि प्रारंभ की जाएगी। इससे समूह एवं ग्राम संगठन स्तर पर होने वाले सभी प्रकार के वित्तीय लेन–देन को तत्काल लोकओस एप्लीकेशन पर अद्यतन किया जा सकेगा। इससे ग्रामीण स्तर पर डिजिटाइजेशन को एक नया आयाम मिलेगा।

मासिक प्रतिवेदन एवं ग्रेडिंग इंट्री :– समूह, ग्राम संगठन एवं संकुल संघ के मासिक प्रतिवेदन की इंट्री संबंधित कैडर के द्वारा किया जा रहा है। इससे सामुदायिक संगठन की वास्तविक स्थिति का पता लगाया जाता है। मासिक प्रतिवेदन की प्रविष्टि के आधार पर ही सामुदायिक संगठनों की ग्रेडिंग की जा रही है। 'सी' या 'डी' ग्रेडिंग वाले सामुदायिक संगठनों पर अधिक ध्यान देकर उसकी कार्यप्रणाली में आवश्यक सुधार लाना संभव हुआ है।

इसके अतिरिक्त जीविका सामुदायिक संगठन स्तर पर समय–समय पर संचालित विभिन्न गतिविधियों को भी संबंधित मोबाइल एप्प के माध्यम से डिजिटाइजेशन किया जाता रहा है। मद्य निषेध हेतु जागरूकता अभियान, पौधारोपण, नीरा उत्पादन आदि गतिविधियों को भी मोबाइल एप के माध्यम से इससे संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियों, तस्वीरों एवं आंकड़ों की ऑनलाइन प्रविष्टि की जाती है।

हजार से लखपति का सफर

इंदु भारती का घर सुपौल जिला के निर्मली प्रखंड के बेलाश्रृंगार मोती में है, जो बिहार के शोक कही जाने वाली नदी कोसी के किनारे बसा है । हर साल बाढ़ के कारण उन्हें अपने पुरे परिवार के साथ तटबंध पर जीवन यापन करना पड़ता था जिससे उन्हें घर चलाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती थी। पढ़ी लिखी होने के बावजूद इंदु भारती एवं उनके पति दोनों मनरेगा में मजदूरी कर किसी तरह अपने परिवार का भरण–पोषण कर रहे थे। मजदूरी से होने वाली कमाई से जब परिवार का पेट नहीं भर पा रहा था, तब उनके पति ट्रक चलाने लगे। इसी बीच इंदु भारती साल 2014 में जीविका समूह से जुड़ गयी। उन्होंने स्वयं सहायता समूह से 1300 रुपये का ऋण लिया और इन पैसों से एक बकरी खरीदकर बकरी पालन की शुरुआत की। इस काम में उनके घर वालों ने भी उनका साथ दिया, इससे उनकी बकरियों की संख्या बढ़ती चली गई।

इंदु भारती का मायका पटना के अनीसाबाद इलाके में है। उन्होंने अपनी स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई पटना से पूरी की है। स्नातक और बी.एड. की डिग्री रखने वाली इंदु मानती है कि अगर समाज में बदलाव लाना है, तो शिक्षा बहुत जरूरी है। इसलिए काम से फुरसत मिलने पर वह गाँव में अपने आस–पड़ोस के बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाती है। इस काम से भी उन्हें अच्छी–खासी आमदनी हो जाती है। वह सी.टी.ई.टी. परीक्षा की तैयारी कर रही है। ट्यूशन के साथ ही वह घर पर गांव की लड़कियों को सिलाई भी सिखाती है। इन सभी कामों से आज उनकी सालाना आमदनी 5 लाख से ऊपर हो गयी है। इंदु भारती के भीतर कुछ नया सीखने की ललक हमेशा रहती है। वह इन दिनों अपने पति के साथ ट्रैक्टर चलाना भी सीख रही है।

वह बताती है, " मुझे ट्रैक्टर चलाते देख गांव की दूसरी महिलाएँ भी काफी प्रेरित हो रही हैं"। इस प्रकार इंदु की कहानी उन लाखों महिलाओं के लिए एक मिसाल है, जो अपने घर में ही कोई न कोई जीविकोपार्जन गतिविधि को अपनाकर गरीबी को मात देने की इच्छा रखती हैं।

सामाजिक परिवर्तन से आयी राजनीतिक जागरूकता

जीविका दीदियों के रूप में ग्रामीण महिलाओं ने गाँव–समाज के विकास में मौन क्रांति का आगाज किया है। गरीबी उन्मूलन, शराबबंदी, खुले में शौच मुक्त अभियान समेत विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन एवं व्यवहार परिवर्तन के क्षेत्र में उनके द्वारा चलाये गए जन–जागरूकता अभियान का व्यापक असर दिखा और लोगों का विश्वास जीविका दीदियों पर बढ़ा है।

जीविका दीदियों ने अपने–अपने गाँव–पंचायत में ग्रामीणों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास का नेतृत्व किया है। उन्हें अपने क्षेत्र में राजनीतिक नेतृत्व करने का भी अवसर मिला। उनके द्वारा किये गए उत्कृष्ट कार्य की बदौलत उन्हें पंचायत चुनाव हेतु विभिन्न पदों के लिए ग्रामीणों ने उम्मीदवार बनाया और वो विजयी भी होती रहीं है।

लखीसराय जिला अंतर्गत सूर्यगढ़ा प्रखंड स्थित हल्दी गाँव निवासी श्रीमती शबाना आज़मी का भी नाम महिला नेतृत्वकर्त्ता के रूप में आता है। शबाना आज़मी वर्ष 2014 से सूर्यमुखी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुडी हैं। दसवीं पास शबाना आज़मी जीविका मित्र के रूप में कार्य कर रही थी। समूह के माध्यम से सामाजिक कार्यों से भी जुड़ी रहीं। उनके कार्य और जज्बे को देखते हुए जीविका दीदियों ने उन्हें वर्ष 2022 के वार्ड चुनाव में वार्ड आयुक्त के लिए प्रत्याशी बनाया। जीविका दीदी के रूप में मिली पहचान एवं इनके द्वारा चलाये गए विभिन्न जन–जागरूकता अभियान की बदौलत शबाना आज़मी नगर परिषद् हेतु गोपालपुर पंचायत के हल्दी गावं के वार्ड न. 7 से वार्ड पार्षद चुनी गई। शबाना आज़मी अब समाज के साथ–साथ अपने परिवार के लिए भी संबल बनी हैं। इनका परिवार इनकी कामयाबी से खुश हैं। आने वाले दिनों में शबाना आज़मी नगर पालिका से आगे बढ़ते हुए जिला स्तरीय चुनाव में अपनी सामजिक एवं राजनीतिक भागीदारी पेश करने को तैयार हैं।

फर्श से अर्श की यात्रा

रमावती देवी बक्सर जिला के बक्सर सदर प्रखंड अंतर्गत कमरपुर पंचायत की रहने वाली हैं। 60 वर्षीय रमावती का परिवार अत्यंत गरीब था। इनके परिवार में सदस्यों की संख्या 6 है। उनके पास खेती के लिए अपना कोई भी भूमि नहीं थी। इनके पति मज़दूरी करते थे जिससे उनके 6 सदस्यीय परिवार का गुजारा ठीक से नहीं होता था। उनके बच्चे विद्यालय नहीं जा पाते थे। पहले दीदी खुद भी सिर्फ मजदूरी करती थी। कई दिन सभी परिवार को दो वक्त का भोजन भी नहीं मिल पाता था।

वर्ष 2016 में रमावती देवी, पूजा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। समूह से जुड़ने के बाद सर्वप्रथम दीदी ने भैंस खरीदने के लिए 20,000 रुपये ऋण समूह से लिया। उन्होंने ससमय क़िस्त के भुगतान (ऋण वापसी) के बाद दूध, दही, मक्खन, पनीर और मावा (खोवा) का रोजगार करने का निर्णय किया, इसके लिए पुन: 50,000 रुपये ऋण समूह से ली।

रमावती देवी ने बताया कि जीविका समूह में जुड़ने के रोजगार करने से मेरी आमदनी अभी 10,000 रुपये प्रति माह है जबकि पहले सिर्फ 3000 प्रति माह थी। आज मैं बेहद खुश हूँ कि मैं अपने रोजगार को आगे बढ़ा रही हूँ। मैं अपने परिवार का भरण–पोषण सही से कर रही हूँ। मेरे बच्चे पढ़ाई करने लगे है एवं उनके खान – पान में भी बदलाव आया है। मैं प्रत्येक दीदी को यही बोलती हूँ कि जीविका से जुड़े और ऋण लेकर अपना रोजगार करें। दीदी जीविका समूह से जुड़े तथा जीविका के पंचसूत्रा का अवश्य पालन करें। जीविका की योजनाओं का लाभ उठाकर अपने परिवार को समृद्ध बनाएँ एवं अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाएँ तथा उन्हें स्वावलंबी भी बनायें।

पीतल व्यवसाय ने बदली जीवन

रिंकी दीदी पटना जिला के बिहटा प्रखण्ड में पीतल नगरी के नाम से प्रसिद्ध परेव ग्राम की निवासी हैं। जीविकोपार्जन हेतु पीतल के बर्तन बनाने की यह परंपरा सदियों से चली आ रही है। कालांतर में उद्योग के बदलते स्वरूप तथा पीतल के व्यवसाय से घटती आमदनी के कारण इससे जुड़े लोग इस व्यवसाय से विमुख हो गए तथा दैनिक मजदूरी के लिए दूसरे कार्यों पर निर्भर हो गए। परिवार की खराब आर्थिक स्थिति के कारण उनके पति कमाने हेतु नेपाल में प्रवास कर रहे थे।

रिंकी दीदी वर्ष 2017 में जीविका स्वयं सहायता समूह में जुड़ी। जीविका से जुड़ने के पश्चात दीदी नियमित बैठक में पैसा जमा करने लगी। उन्होंने अपने समूह से ऋण लेकर सर्वप्रथम महाजन के कर्ज को चुकता किया। उसके पश्चात समूह से 2 लाख रुपए ऋण लेकर अपने पूर्वजों द्वारा संचालित पीतल के बर्तन बनाने के व्यवसाय को आगे बढ़ाना शुरू किया । 300 किलोग्राम कच्चा माल से अपने व्यवसाय की शुरुआत करके आज 1 टन कच्चे माल की सामाग्री तैयार करके विक्रय कर रही हैं। व्यवसाय को और बेहतर बनाने हेतु एन.आर.ई.टी.पी. इंक्यूबेशन प्रोग्राम के तहत 3 लाख रुपये की राशि उन्हें प्राप्त हुआ है।

पारिवारिक समस्याओं के बावजूद दीदी आज प्रगति पथ पर अग्रसर हैं। वह प्रत्येक महीने लगभग 7 से 8 लाख रुपये तक की सामग्री तैयार कर स्थानीय बाजार में खुदरा एवं थोक व्यापारी को बेच रही हैं। आस–पास के पीतल–बर्तन निर्माताओं के कच्चा माल को छिलाई, कुनाई और पॉलिश मशीन से तैयार कर के भी मुनाफा कमा रही हैं। वर्तमान में दीदी प्रति माह 22 से 24 हजार रुपये का शुद्ध मुनाफा कमा रही हैं।

एग्रो एकड़ चकाई जीविका महिला किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, जमुई

जमुई जिला धान, गेहूं, आलू के साथ–साथ मडुआ की खेती के लिए भी जाना जाता है। जमुई जिला के चकाई एवं झाझा प्रखंड की कृषि भूमि मडुआ की खेती के लिए अनुकूल है। यहाँ पर जीविका समूह की महिला किसान दीदियाँ बड़े पैमाने पर मडुआ उत्पादन कर इसके विभिन्न उत्पाद यथा आटा, लड्डू एवं बिस्कुट बना रही हैं। लेकिन इन दीदियों को अपने स्तर से बाजार की उपलब्धता नहीं रहने के कारण इन्हें फसलों एवं उत्पादकों का उचित मूल्य नहीं मिला पाता था।

इन समस्याओं को देखते हुए जमुई जिले में जीविका समूह की महिला किसान दीदियों को बिचौलियों से मुक्ति दिलाने एवं उन्हें एक ही स्थान पर फसलों की खरीद–बिक्री के लिए एक बेहतर मंच दिलाने के उद्देश्य से किसान प्रोडूसर कंपनी (एफ.पी.सी.) की स्थापना की गई है।

जमुई जिला में जीविका समूह की महिला किसान दीदियों के फसलों को उचित मूल्य और बाजार उपलब्ध करवाने हेतु 19 मार्च 2021 को कंपनी एक्ट तहत एग्रो एकड़ चकाई जीविका महिला किसान प्रोडूसर कंपनी का गठन किया गया। एग्रो एकड़ चकाई जीविका महिला किसान प्रोडूसर कंपनी लिमिटेड का मुख्य उद्देश्य जीविका से जुड़े किसानो को सरकारी विभागों से अभिसरण, आर्थिक एवं तकनीकी सहयोग प्रदान करना है। वहीँ अपने अंशधारको को लाभ पहुंचाते हुए महिला किसानों की आमदनी न्यूनतम एक लाख रूपये वार्षिक करना है। वर्त्तमान में एग्रो एकड़ कंपनी से कुल 615 शेयर धारक जीविका दीदियाँ जुड़ चुकी हैं, जो मुख्य रूप से धान, गेहूँ एवं आलू के उत्पादन के साथ–साथ मडुआ उत्पादन भी कर रही हैं। कंपनी से जमुई जिला के चकाई, झाझा एवं सोनो प्रखंड की दीदियाँ मुख्य रूप से जुड़ी हुई हैं। चकाई प्रखंड से सबसे ज्यादा 506 दीदियाँ इस कंपनी की अंशधारक है।

जीविका के द्वारा कंपनी की स्थापना के समय 15 लाख की राशि प्रदान की गयी। इसके अलावा कंपनी में शामिल 615 अंशधारको के द्वारा 7 लाख 5 हजार रूपये अंशपूंजी के रूप में जमा किया गया है। अंशधारकों में से छोटे, सीमांत और भूमिहीन सदस्य शामिल हैं। जीविका द्वारा प्रोत्साहित एग्रो एकड़ चकाई जीविका महिला किसान प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड में निदेशक के तौर पर 10 दीदियाँ कंपनी के प्रबंधन का काम देखती हैं। इस कंपनी को वितीय वर्ष 2021–22 में 67 हजार रूपये का शुद्ध लाभ हुआ है। वित्तीय वर्ष 2023–24 (नवम्बर तक) में धान, गेहूं एवं आलू की खरीद–बिक्री से कुल 25185 रूपये का मुनाफा हुआ है। प्रोडूसर कंपनी के खुलने से अब जीविका समूह की महिला किसानो को फसलों की खरीद– बिक्री की समस्या से निजात मिली है। वहीं समय–समय पर उन्हें बाजार मूल्य से कम दामों पर बीज भी मुहैया कराया जाता है। अभी हाल ही में कंपनी के माध्यम से दीदियों को काले गेहूँ का बीज भी उपलब्ध कराया गया है।

कंपनी की वित्तीय विवरणी :–

वित्तीय वर्ष 2023–24 (30 नवंबर–2023 तक)					
क्र. सं.	उत्पाद	मात्रा (किलोग्राम में)	खरीद (रुपये में)	बिक्री (रुपये में)	कुल राजस्व (रुपये में)
1	आलू	5300	92750	98050	5300
2	गेहूँ	3590	232500	238920	6420
3	धान का खेत	2693	401155	414620	13465
कुल		**11583**	**726405**	**751590**	**25185**

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार